शहीद हेमू कालाणी सर्वोदय बाल विद्यालय

खिलौना बनाने वाले बच्चे की कहानी

सुमित - किसी भी क्षेत्र में सफलता ऐसे ही नहीं मिलती। इसके लिए निरंतर प्रयास और संघर्ष करना पड़ता है। जब परिस्थितियाँ बिल्कुल विपरीत हो तो संघर्ष अत्यंत कठिन हो जाता है। कभी मन हारने लगता है, तो कभी मन दुगुने उत्साह से संघर्ष के लिए तैयार हो जाता है। यही मेरे छोटे-से जीवन की कहानी है।

मैं सुमित, एक अत्यंत गरीब परिवार में 13 दिसंबर, 2004 को जन्म लिया। जब से होश संभाला घर में हर चीज का अभाव देखा। मैं अपने परिवार के साथ आदिवासी कैंप, नेहरू नगर, दिल्ली में रहता हूँ। मेरे पिताजी का नाम श्री बनवारी है। अभाव भरे जीवन में जब होश संभाला, तो अपने पिताजी को रोजी-रोटी के लिए संघर्ष करते देखा। वे कपड़े से बने खिलौने बेचा करते थे, जिससे मुश्किल से हमारा भरण-पोषण हो पाता था। तब मैंने छोटी उम्र में ही उनकी सहायता करने की ठानी और उनके साथ खिलौने बनाने एवं बेचने लगा। यही मेरी नियति बन गई थी।

एक दिन खिलौने बेचते समय हमें एक व्यक्ति मिला, जिसने खिलौने खरीदे और मेरी पढ़ाई के बारे में पूछा। पढ़ाई क्या होती है, मुझे इसका कोई ज्ञान नहीं था। पिताजी को भी वह व्यक्ति अटपटा लगा कि उनकी सहायता करने वाले कमाऊ पूत को यह क्या उलटा-सीधा पढ़ा रहा है? लेकिन वह व्यक्ति मुझसे लगभग प्रतिदिन मिलने लगा और हमारे घर का पता पूछने लगा। पिताजी ने बड़ी मुश्किल से उसे अपना पता बताया। एक रात वह व्यक्ति हमें ढूंढता हुआ हमारे घर पहुंच गया और पिताजी को समझाने लगा कि इसे स्कूल में दाखिला कराओ। हम इसे वही ये खिलौने बनाने का सामान भी देंगे। यानि वह वहाँ पढ़ेगा और खिलौने भी बनाएगा तथा शाम में खिलौने बेचकर कुछ कमाएगा भी। मेरे पिताजी को यह बात अच्छी लगी। विद्यालय में उस व्यक्ति ने मुझे प्रधानाचार्य जी से मिलाया, जिन्होंने शायद मेरे बारे में पहले से ही सुन रखा था। उसी का परिणाम है कि आज मैं शहीद हेमू कालाणी सर्वोदय विद्यालय, लाजपत नगर, दिल्ली में ग्यारहवीं का छात्र हूँ। वह व्यक्ति कोई और नहीं इसी विद्यालय के ड्राइंग टीचर श्री अमित शर्मा हैं और प्रधानाचार्य श्री बी. के. शर्मा जी हैं।

इन दोनों ने मेरा भरपूर सहयोग किया और निरंतर उत्साह बढ़ाते रहे। इन्हीं के प्रोत्साहन के कारण मेरे जैसे कई बच्चों ने स्कूल में पढ़ाई शुरू कर दी।

एक दिन हमारे विद्यालय में दिल्ली के शिक्षा मंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी आए, जिन्हें मेरे हाथों का बना हुआ खिलौना भेंट किया गया। वे बहुत खुश हुए और हम जैसे बच्चों से मिले। उन्होंने हमारी खूब तारीफ की और उत्साह बढ़ाया तथा प्रधानाचार्य जी को निर्देश दिया कि इन बच्चों की हर तरह से सहायता की जाए एवं इनकी इस कला को आगे बढ़ाया जाए। मुझे बहुत खुशी हुई। माननीय शिक्षा मंत्री जब भी इस विद्यालय में आए हमलोगों से अवश्य मिले। देशविदेश से आए अन्य गणमान्य - लोगों को उपहार स्वरूप हमारा खिलौना ही भेंट किया जाता है। यह हमारे लिए गर्व की बात है।

आज जब पूरे विश्व में कोरोना वैश्विक महामारी फैली हुई है, अपने देश में हजारों-लाखों लोग बेरोजगार हो चुके हैं। ऐसी स्थिति में इस खिलौना बनाने की कला ने मेरे परिवार की हर जरूरत को पूरा किया है। मैं इसके लिए अपने श्री अमित शर्मा जी एवं अन्य गुरुजनों, प्रधानाचार्य श्री बी. के. शर्मा जी और दिल्ली के माननीय शिक्षामंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी का आभार प्रकट करता हूँ। आज श्रीमती रमा शर्मा, श्रीमती नीता शर्मा और RWA, लाजपत नगर के अध्यक्ष श्री सी. बी. सिंह जैसे कुछ समाजसेवी हमारी कला को राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में हमारी मदद कर रहे हैं। इससे हमें आर्थिक सहायता भी मिल रही है। इसके लिए मैं इनका भी बहुत आभारी हूँ।

धन्यवाद।